पाठ-15

न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है

आइए, सीखें : ● स्वाभिमान, शौर्य, वीरता, दृढ़संकल्प, देश प्रेम की भावना का विकास ● इतिहास से प्रेरणा लेने का संदेश ● विदेशी शब्दों के स्थान पर हिन्दी शब्दों की जानकारी। ● रस परिचय ● छंद में तुकान्त/अतुकान्त की जानकारी

*(**पाठ-परिचय :** भारत ने विश्व को शांति और अहिंसा का संदेश दिया है। उसने अपने स्वाभिमान पर आँच नहीं आने दी है। देश की रक्षा के लिए वीर सपूतों ने अपने प्राणों को भी न्यौछावर कर दिया है। यहाँ के वीरों के शौर्य से आक्रमणकारी भी घबराते थे।)*

न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।
जिसे सुनकर दहलती थी कभी छाती सिंकदर की,
जिसे सुनकर कि कर से छूटती थी तेग बाबर की,
जिसे सुन शत्रु की फौजें बिखरती थीं, सिहरती थीं,
विसर्जन का शरण ले डूबती नावें उभरती थीं।
हुई नीली कि जिसकी चोट से आकाश की छाती,
न यह समझो कि अब रण बाँकुरी हुंकार सोई है।

न यह ....

कि जिसके अंश से पैदा हुए थे हर्ष और विक्रम
कि जिसके गीत गाता आ रहा संवत्सरों का क्रम

शिक्षण-संकेत : ■ कविता को हाव-भाव, सुर, ताल के साथ सुनाएँ व बालकों से दोहराने को कहें ■ ऐतिहासिक प्रसंग-सिकन्दर, बाबर, शिवाजी की वीरता, राणा प्रताप का देशप्रेम, शौर्य, जौहर की घटना आदि के विषय में चर्चा करें ■ कविता में निहित भाव स्पष्ट करें ■ भावों को स्पष्ट करने के लिए प्रेरक घटनाएँ आदि सुनाएँ ■ कविता में कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों से ही निकलवाने का प्रयास करें। (वाक्यप्रयोग, विलोम, पर्याय आदि के माध्यम से)

कि जिसके नाम पर तलवार खींची थी शिवाजी ने,
किया संग्राम अन्तिम श्वास तक राणा प्रतापी ने,
किया था नाम पर जिसके कभी चित्तौड़ ने जौहर,
न यह समझो कि धमनी में लहू की धार सोई है।

न यह ....

दिया है शान्ति का संदेश ही हमने सदा जग को,
अहिंसा का दिया उपदेश भी हमने सदा जग को,
न इसका अर्थ हम पुरुषत्व का बलिदान कर देंगे।
न इसका अर्थ हम नारीत्व का अपमान सह लेंगे।
रहे इंसान चुप कैसे कि चरणाघात सहकर जब,
उमड़ उठती धरा पर धूल, जो लाचार सोई है।

न यह ....

न सीमा का हमारे देश ने विस्तार चाहा है,
किसी के स्वर्ण पर हमने नहीं अधिकार चाहा है,
मगर यह बात कहने में न चूके हैं, न चूकेंगे।
लहू देंगें मगर इस देश की माटी नहीं देंगे।
किसी लोलुप नजर ने यदि हमारी मुक्ति को देखा,
उठेगी तब प्रलय की आग जिस पर क्षार सोई है।
न यह..........

– रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'

कवि परिचय : रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'– वर्तमान काल के गीतकारों में रामकुमार चतुर्वेदी का गरिमापूर्ण स्थान है। चंचल जी ने जहाँ वीर और रौद्र रस से ओतप्रोत रचनाओं का लेखन किया है, वहीं श्रृंगार रस के लेखन में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। आपकी कर्मस्थली ग्वालियर रही है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोज कर लिखिए -

दहलती	---------------	सिहरती	---------------
विसर्जन	---------------	रण	---------------
संवत्सर	---------------	मुक्ति	---------------
कर	---------------	हुंकार	---------------
लहू	---------------	पुरुषत्व	---------------
नारीत्व	---------------	चरणाघात	---------------
लोलुप	---------------	क्षार	---------------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) किस भारतीय की वीरता को सुनकर सिकन्दर की छाती दहलती थी?

(ख) नव संवत्सर किस राजा ने प्रारंभ किया था ?

(ग) शिवाजी ने किसके विरुद्ध तलवार उठाई थी ?

(घ) विश्व को शान्ति का सन्देश देने वाले किन्हीं दो महापुरुषों के नाम बतलाइए?

(ङ) सिकन्दर कौन था ?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

(क) 'तलवार सोई है' से क्या आशय है ?

(ख) हर्ष इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

(ग) यदि किसी ने हमारी स्वतंत्रता छीनने का प्रयास किया तो हम क्या करेंगे ?

(घ) 'चितौड़ का जौहर' क्यों प्रसिद्ध है ?

(ङ) इस कविता से हमें क्या सन्देश मिलता है ?

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित अर्थ लिखिए-

(क) लहू देंगे मगर इस देश की माटी नहीं देंगे।
किसी लोलुप नजर ने यदि हमारी मुक्ति को देखा,

उठेगी तब प्रलय की आग जिस पर क्षार सोई है,

(ख) किया संग्राम अन्तिम श्वास तक राणा प्रतापी ने,
किया था नाम पर जिसके कभी चित्तौड़ ने जौहर,
न यह समझो कि धमनी में लहू की धार सोई है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय समझाइए -

(अ) हुई नीली कि जिसकी चोट से आकाश की छाती।

(आ) रहे इंसान चुप कैसे कि चरणाघात सहकर जब।

(इ) न सीमा का हमारे देश ने विस्तार चाहा है।

(ई) न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।

भाषा-अध्ययन

पढ़िए और जानिए-	
आगत शब्द (विदेशी शब्द)	**हिन्दी शब्द**
ख्याल	विचार
ताज्जुब	आश्चर्य
दखल	हस्तक्षेप

प्रश्न 1. इस कविता से पाँच ऐसे ही आगत शब्द छाँट कर उनके हिन्दी शब्द लिखिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वर्ग पहेली से - आकाश, रण और लहू के दो-दो पर्यायवाची शब्द खोजकर लिखिए-

न	यु		रु
सं	भ	द्ध	धि
र	ग्रा	व्यो	र
क्त		म	य

प्रश्न 3. सुनील गोविन्द का मित्र है किन्तु अरविन्द का शत्रु है। इस वाक्य में मित्र और उसके विलोम शब्द शत्रु का प्रयोग हुआ है। आप इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों

के वाक्य प्रयोग, उनके विलोम शब्दों के साथ लिखिए-

अहिंसा, अर्थ, शान्ति, आग

प्रश्न 4. 'नारी' में 'त्व' प्रत्यय जो़डकर नारीत्व तथा पुरुष में 'त्व' प्रत्यय जो़डकर पुरुषत्व बना है। उसी प्रकार 'त्व' प्रत्यय जो़डकर तीन और शब्द बनाइए-

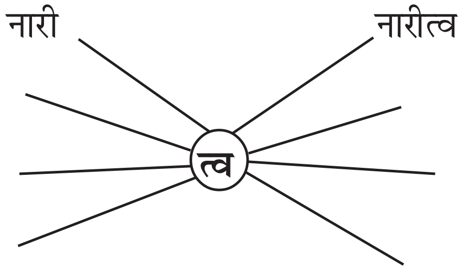

पढ़िए और समझिए

द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा।

पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा।

यहाँ चरण के अन्त में एक जगह अभिरामा दूसरे चरण के अन्त में - सुदामा जैसे समान अन्तिम ध्वनि वाले शब्द आए हैं।

छन्द में ऐसी स्थिति को तुक कहते हैं। तुक छंद के प्राण हैं।

एक बात और है-

छन्द के चरणान्त में समान ध्वनि वाले वर्ण आने पर तुकान्त और असमान ध्वनि वाले वर्ण आने पर अतुकान्त स्थिति कहलाती है।

प्रश्न 5. इस पाठ में तुकान्त स्थिति समझकर - तुक मिलाने वाले शब्द छाँटकर लिखिए।

यह भी जानिए

पिछली कक्षा में आप पढ़ चुके हैं

मैया, मोहि दाऊ बहुत खिझायो।

मोसौं कहत मोल को लीन्हो, तोहि जसुमति कब जायो।

माता और पुत्र के बीच हो रहे इस वार्तालाप में कौन-सा भाव है ?

जहाँ पुत्र/बालक के प्रति स्नेह का भाव हो, उस वर्णन में वात्सल्य रस होता है।

रस- किसी कविता को पढ़ते या सुनते समय प्राप्त आनन्द की अनुभूति को रस कहते हैं।

साहित्य में दस रस हैं। इन सभी रसों के एक-एक स्थायी भाव हैं।

स्थायी भाव-

स्थायी भाव सहृदय के मन में चिरकाल से स्थित रहते हैं। ये उचित अवसर आने पर उत्पन्न हो जाते हैं।

विभिन्न रसों के उदाहरण पढ़िए और समझिए-

1. सोक विकल सब रोवहिं रानी। रूप, सील, बल तेज बखानी।। (करुण)

   करहिं विलाप अनेक प्रकारा । परहि भूमितल बारहिं बारा।।

2. अब लौं नसानी, अब न नसैहों, (शान्त)

   राम कृपा भव निशा सिरानी, जागे फिर न डसैहों।

3. सिर घोट मोट, पर चुटिया थी लहराती। (हास्य)

   थी तोंद लटक कर घुटनों को छू जाती।

   जब मटक-मटक कर चले हँसी भी भारी।

   हो गए देखकर लोट-पोट नर-नारी।।

रस	**स्थायी भाव**
श्रृंगार रस	रति (प्रेम)
हास्य रस	हास (हँसी)
करुण	शोक
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
वीभत्स	जुगुप्सा (घृणाभाव)
अद्भुत	विस्मय (आश्चर्य)
शान्त	निर्वेद (शम, पश्चाताप)
वात्सल्य	वत्सल (पुत्र/शिक्षक प्रेम)

प्रश्न 6.''न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है'' कविता में कौन-सा रस है नाम लिखकर स्थायी भाव भी लिखिए ।

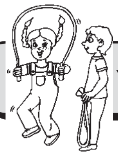

योग्यता विस्तार

1. अपनी कक्षा में हर्ष, विक्रमादित्य, शिवाजी, महाराणा प्रताप के विषय में चर्चा कीजिए।
2. भारतीय राजाओं के चित्र संग्रह करके अपनी फाइल में लगाइए और इनके संबध में संक्षेप में जानकारी लिखिए।
3. हमारे देश पर यदि कोई अन्य देश आक्रमण करे तो उस समय हम क्या करेंगे ? कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. निम्नलिखित पंक्तियों को शिक्षक कक्षा में पढ़ें और इन पर बच्चों के विचार सुनें।

   वीर शिवाजी की गाथाएँ
   उसको याद जबानी थी।
   बुंदेले हरबोलों के मुँह
   हमने सुनी कहानी थी।
   खूब लड़ी मर्दानी वह तो
   झाँसी वाली रानी थी।....

5. शिक्षक की सहायता से अपनी पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं में प्रयुक्त रस को पहचानें।